



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1717]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 8, 2008/अग्रहायण 17, 1930

No. 1717]

NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 8, 2008/AGRAHAYANA 17, 1930

लोक सभा सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 दिसम्बर, 2008

का.आ. 2852(अ).—लोक सभा अध्यक्ष का भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन दिनांक 5 दिसम्बर, 2008 का निम्नलिखित विनिश्चय एतद्वारा अधिसूचित किया जाता है:—

“माननीय लोक सभा अध्यक्ष के समक्ष

संसद भवन, नई दिल्ली

श्री संतोष गंगवार, मुख्य सचेतक,

भारतीय जनता पार्टी,

2, संसद भवन, नई दिल्ली-110001

बनाम

श्री चन्द्रभान भैया सिंह,

संसद सदस्य (लोक सभा),

दिल्ली का पता : 201, नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली-110001

स्थायी पता : 249, हंसराज हाऊस, राइट टाउन,

जिला-दमोह (मध्य प्रदेश)

याची

प्रत्यर्थी

के मामले में

आदेश:

1. यह आवेदन लोक सभा में भारतीय जनता पार्टी के मुख्य सचेतक श्री संतोष गंगवार, संसद सदस्य, लोक सभा द्वारा प्रत्यर्थी श्री चन्द्रभान भैया सिंह, लोक सभा सदस्य के विरुद्ध दाखिल किया गया है जिसमें प्रत्यर्थी को भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के

अधीन वर्तमान लोक सभा का सदस्य होने और बने रहने से निरह करने के लिए प्रार्थना की गई है।

2. याची के अनुसार प्रत्यर्थी भारतीय जनता पार्टी (जिसे इसमें इसके पश्चात् भाजपा कहा गया है) से संबंधित है और मई, 2004 में हुए निर्वाचन में मध्य प्रदेश के दमोह संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के टिकट पर निर्वाचित हुए थे और उनका नाम लोक सभा की भाजपा सदस्यों की सूची में शामिल है।

3. याचिका में याची ने कहा है कि लोक सभा का दो दिन का विशेष सत्र भारत के प्रधानमंत्री को विश्वास मत हासिल करने के लिए 21 और 22 जुलाई, 2008 को बुलाया गया था। इस संबंध में भाजपा ने 18 जुलाई, 2008 को लोक सभा में अपने सभी सदस्यों, जिनमें प्रत्यर्थी भी शामिल है, को सभा में 21 और 22 जुलाई, 2008 को उपस्थित रहने और केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् में विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान करने के लिए तीन पॉइंट का व्हिप जारी किया था।

4. याची द्वारा यह तर्क दिया गया है कि भाजपा, जिसके टिकट पर प्रत्यर्थी लोक सभा के लिए निर्वाचित हुआ था, द्वारा उसे व्हिप जारी किए जाने के बावजूद प्रत्यर्थी पार्टी व्हिप और निदेश का घोर उल्लंघन करते हुए मतदान से अनुपस्थित रहे और इस तरह वे लोक सभा का सदस्य बने रहने से निरह हो गए हैं तथा यह कि पार्टी ने अपने निदेश के विरुद्ध मतदान में उनके उपस्थित न रहने को माफ नहीं किया है।

5. प्रत्यर्थी ने 5 सितम्बर, 2008 को उत्तर दाखिल किया जिसमें उन्होंने उन्हें व्हिप तामील किए जाने की बात स्वीकार की है। उन्होंने यह भी कहा है कि वे एक संसद सदस्य की विभिन्न जिम्मेदारियों के प्रति सजग हैं और यह कि वे किसी अवसर विशेष, विशेषकर जब वह विश्वास प्रस्ताव का मुद्दा हो, पर पमदान के महत्व को समझते हैं।

6. अपने उत्तर में प्रत्यर्थी ने यह भी कहा कि वे 20 जुलाई, 2008 को दिल्ली पहुंचे थे और उन्होंने उसी तारीख को भाजपा संसदीय दल की एक बैठक में भाग लिया था और 21 जुलाई को संसद की कार्यवाही में हिस्सा लिया था तथा यह कि 22 जुलाई को वे अपनी पत्नी, जो उनके खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें छोड़ना नहीं चाहती थी, के साथ संसद की बैठक में भाग लेने चले गए थे और यह कि 22 जुलाई को अपराह्न लगभग 3.45 बजे वे "संसद जाते समय अचेत हो गए थे।"

7. अपने उत्तर में प्रत्यर्थी ने यह भी कहा है कि उनकी अचेतावस्था के कारण उन्हें डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया लेकिन वहां उचित प्रतिक्रिया न मिलने के कारण उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ले जाया गया, लेकिन "कर्मचारियों के दुलमुल रवैये के कारण उन्हें चिकित्सा सुविधा के लिए आसलोक नर्सिंग होम ले जाया गया।" उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें अपराह्न लगभग 4.45 बजे आसलोक नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया और उनके अनेक परीक्षण हुए और यह कि अंततः 23 जुलाई को उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

8. उन्होंने अपने उत्तर में यह भी कहा कि उन्हें 22 जुलाई के घटना क्रम की जानकारी अपनी पत्नी से मिली और उन्हें यह पता चला कि वे अचेत हो गए थे, उन्हें खून की उल्टी हुई थी तथा तेज बुखार था। उन्होंने कहा है कि उनकी पत्नी ने उनके पी.ए. से भाजपा नेतृत्व तथा लोक सभा को उनकी स्थिति के बारे में सूचित करने के लिए कहा था, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है।

9. इसलिए, प्रत्यर्थी के अनुसार, उनके स्वास्थ्य की स्थिति के कारण वे 22 जुलाई, 2008 को संसद की कार्यवाही में भाग नहीं ले पाए थे और इस प्रकार दसवीं अनुसूची के उपबंध उनके मामले में लागू नहीं होते। उन्होंने यह भी आरोप लगाया है कि भाजपा नेतृत्व को उनसे व्यक्तिगत और राजनीतिक दुर्भाव है और वह निराधार कारणों से उनका राजनीतिक कैरियर पूरी तरह से समाप्त कर देना चाहता है, जो इस तथ्य से सिद्ध हो जाएगा कि उन्हें 23 जुलाई, 2008, जिस तारीख को मौजूदा याचिका भी दाखिल की गई है, को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया।

10. अपने उत्तर के साथ, प्रत्यर्थी ने उस पत्र, जो कथित रूप से प्रत्यर्थी को श्री अरुण जेटली द्वारा भेजा गया है, की एक प्रति, और आसलोक नर्सिंग होम, नई दिल्ली में उनके उपचार से संबंधित कुछ चिकित्सा कागजात तथा बिलों की प्रतियां दाखिल की हैं।

11. मैंने मामले की 24 सितम्बर, 2008 को और पुनः 18 अक्टूबर, 2008 को व्यक्तिगत रूप से सुनवाई की। 24 सितम्बर को सुनवाई के पहले दिन याची व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुआ और प्रत्यर्थी के वकील श्री वरुण ठाकुर ने इस आधार पर स्थगन की मांग की कि उनके वरिष्ठ वकील उपलब्ध नहीं थे। याची ने कतिपय निवेदन किए जिनमें उन्होंने प्रत्यर्थी द्वारा व्हिप प्राप्त किए जाने तथा मतदान से उनकी अनुपस्थिति के बारे में उल्लेख किया और प्रत्यर्थी द्वारा दाखिल उत्तर पर टिप्पणियां कीं। प्रत्यर्थी के विद्वान वकील ने स्थगन के लिए अपनी प्रार्थना को यह कहते हुए दोहराया कि उनके मुवक्किल जिला सतर्कता और मूल्यांकन समिति की बैठक में हैं और

उनके विद्वान वरिष्ठ वकील किसी अन्य स्थान पर व्यस्त हैं। तथापि, सुनवाई के अंत में मैंने निदेश दिया कि प्रत्यर्थी की ओर से लिखित तर्क अथवा निवेदन 29 सितम्बर, 2008 को या इससे पूर्व पेश किए जा सकते हैं जिसकी एक प्रति याची को दी जाए।

12. 29 सितम्बर, 2008 को प्रत्यर्थी की ओर से लिखित तर्क प्रस्तुत किए गए जिसमें उन्होंने मुख्य रूप से उन बातों को दोहराया जो उनके उत्तर में अन्तर्विष्ट हैं और उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ बताया कि "नम्र निवेदन है कि प्रत्यर्थी को व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर दिए बिना कोई आदेश पारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह नैसर्गिक न्याय की संकल्पना के विरुद्ध होगा और इसलिए भी कि माननीय अध्यक्ष प्रत्यर्थी के साथ न्याय नहीं कर पाएंगे।" प्रत्यर्थी ने अपने लिखित तर्क में यह भी निवेदन किया कि ऐसे कोई आधार नहीं हैं जिन पर "भारतीय जनता पार्टी के मुख्य सचिव" को कोई राहत दी जा सके।

13. मैंने 18 अक्टूबर, 2008 को अगली व्यक्तिगत सुनवाई की जिसमें याची उपलब्ध थे और प्रत्यर्थी भी अपने वकील श्री वरुण कुमार के साथ उपस्थित थे। याची ने उक्त सुनवाई में निवेदन किए जैसा कि उस तारीख की बैठक के कार्यवाही सारांश से प्रतीत होता है। तत्पश्चात्, प्रत्यर्थी के विद्वान वकील ने अपने निवेदन किए। उन्होंने अपने मुवक्किल के स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में आसलोक अस्पताल द्वारा जारी 'डिस्चार्ज समरी' का उल्लेख किया। प्रत्यर्थी ने स्वयं भी कुछ निवेदन किए। सुनवाई के दौरान प्रत्यर्थी के वकील ने 23, 24 और 25 जुलाई (मतदान की तारीख के बाद की तारीखें) को हुई कुछ घटनाओं के बारे में एक अनुपूरक शपथ पत्र दाखिल करने तथा "मुझे एक अंतिम मौका दिए जाने" का अनुरोध करते हुए लोक सभा कार्यालय में कुछ पत्र प्रस्तुत करने का एक अवसर देने के लिए पुनः अनुरोध किया। जब सुनवाई लगभग समाप्त हो गई थी, वकील ने इस आधार पर पुनः स्थगन के लिए कहा कि उनके वरिष्ठ वकील दिल्ली से बाहर हैं। मैंने सुझाव दिया कि वे अपना निवेदन पूरा कर सकते हैं और यदि वे कोई लिखित निवेदन प्रस्तुत करना चाहते हैं तो मैं उन्हें समय देने के लिए तैयार हूँ। याची ने और आगे समय देने का विरोध किया।

14. 18 अक्टूबर, 2008 को हुई सुनवाई में मैंने निम्नलिखित आदेश पारित किया :—

"आज की सुनवाई में माननीय श्री संतोष गंगवार, याची और श्री चन्द्रभान सिंह, संसद सदस्य अपने वकील श्री वरुण ठाकुर के साथ उपस्थित थे। श्री संतोष गंगवार के निवेदन के पश्चात् श्री वरुण ठाकुर ने कुछ निवेदन किए और इस आधार पर समय मांगा कि उनके वरिष्ठ वकील दिल्ली से बाहर हैं और यह कि वे एक और शपथ पत्र/याचिका दाखिल करना चाहते हैं। अंतिम अवसर के रूप में मैंने प्रत्यर्थी को 24 अक्टूबर, 2008 को या इससे पूर्व एक और शपथ पत्र/याचिका दाखिल करने तथा इसकी एक प्रति याची को देने की अनुमति दी।

अंतिम अवसर के रूप में, मैंने इस मामले में व्यक्तिगत सुनवाई के लिए 3 नवम्बर, 2008 के सायं 5 बजे का समय नियत किया। यदि कोई वरिष्ठ वकील उस तारीख को उपलब्ध नहीं होते हैं तो प्रत्यर्थी उक्त तथ्य की सूचना कार्यालय को देगा ताकि आगे व्यक्तिगत सुनवाई न हो।

यदि प्रत्यर्थी द्वारा आगे कोई शपथ पत्र/याचिका दाखिल की जाती है और उसकी एक प्रति याची को दी जाती है, तो याची 31 अक्टूबर, 2008 को या इससे पूर्व अगला प्रत्युत्तर या उत्तर दाखिल कर सकता है यदि उन्हें ऐसी सलाह दी जाती है।

यदि व्यक्तिगत सुनवाई के लिए कोई अनुरोध नहीं किया जाता है तो कोई अगली सुनवाई नहीं होगी। यह नोट किया जाए कि यह अंतिम अवसर होगा।"

15. तथापि, 18 अक्टूबर, 2008 को दी गई अनुमति के अनुसरण में कोई लिखित तर्क दाखिल नहीं किए गए। 20 नवम्बर, 2008 को अगली व्यक्तिगत सुनवाई हुई जिसमें याची उपस्थित थे और प्रत्यर्थी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता श्री अजीत एस. भस्मे उपस्थित हुए। प्रारंभिक अवलोकन में श्री अजीत एस. भस्मे ने इस आधार पर स्थान की मांग की कि "मुविकल विधान सभा निर्वाचन के कारण अपने निर्वाचन क्षेत्र में है। वे एक राजनीतिक व्यक्तित्व हैं और निर्वाचन के दौरान वे वहाँ से दूर नहीं रह सकते हैं।" वे अपने मुविकल का वर्ष 2007 से उनके चिकित्सीय विवरण, जिसमें उन बीमारियों, जिनसे प्रत्यर्थी पीड़ित हैं, का उल्लेख है, सहित कतिपय दस्तावेज रिकार्ड में लाने के लिए एक अनुपूरक शपथ पत्र दाखिल करना चाहते हैं। याची ने प्रत्यर्थी के वकील द्वारा की गई स्थान संबंधी प्रार्थना का घोर विरोध किया। अंततः, प्रत्यर्थी को एक अंतिम अवसर देने के लिए मैंने प्रत्यर्थी के वकील को उनके द्वारा किए गए अनुरोध के अनुसार एक सप्ताह के भीतर लिखित निवेदन दाखिल करने के समय की अनुमति दी और निम्नलिखित आदेश दिया:—

"मैंने सुनवाई की तारीख नियत नहीं की है। प्रत्यर्थी और माननीय सदस्य श्री चन्द्रभान सिंह द्वारा लिखित निवेदन, यदि कोई हो, तो 27 नवम्बर को या इससे पूर्व दाखिल किया जा सकता है और इसकी एक प्रति श्री गंगवार को दी जाए। यदि इस संबंध में कोई उत्तर हो, तो वे एक दूसरे को इसकी प्रतियाँ उपलब्ध कराएँ और आगे इस संबंध में कोई सुनवाई नहीं होगी।"

16. दी गई अनुमति के अनुसरण में प्रत्यर्थी ने अपने विद्वान अधिवक्ता श्री वरुण ठाकुर को माध्यम से 27 नवम्बर, 2008 को अपने लिखित निवेदन दाखिल किए जिसमें प्रत्यर्थी ने अपनी ओर से उनके वकील द्वारा किए गए निवेदन को दोहराया और इसके साथ आसलोक नर्सिंग होम के डा. अश्विनी चोपड़ा की लिखित राय की एक प्रति और डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल द्वारा 17 मार्च, 2007 को जारी डिस्चार्ज रिपोर्ट की एक प्रति संलग्न की। उसके उत्तर में याची ने 1 दिसम्बर, 2008 को एक प्रत्युत्तर दाखिल किया।

17. संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) में यह उपबंध है कि पैरा 4 और 5 के उपबंधों के अधधीन सभा का कोई सदस्य, जो किसी राजनीतिक दल का सदस्य है, सभा का सदस्य बने रहने के लिए उस दशा में निरह होगा जिसमें वह ऐसे राजनीतिक दल जिसका वह सदस्य है, द्वारा लिए गए किसी निदेश के विरुद्ध, ऐसे राजनीतिक दल की पूर्व अनुज्ञा के बिना ऐसी सभा में मतदान करता है या मतदान करने से विरत रहता है अथवा ऐसे मतदान या मतदान करने से विरत रहने को ऐसे राजनीतिक दल ने ऐसे मतदान या मतदान करने से विरत रहने की तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर माफ नहीं किया है। वर्तमान मामले में पैरा 4 और 5 के उपबंध लागू नहीं होते हैं।

18. डॉ. महाचन्द्र प्रसाद सिंह बनाम सभापति, बिहार विधान परिषद् एवं अन्य (2004) 8 एससीसी 747, के निर्णय में माननीय उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की है कि दसवीं अनुसूची के अधीन "सभा के सदस्य की निरहता के मुद्दे पर निर्णय करने का अंतिम प्राधिकार सभा के सभापति या अध्यक्ष में निहित है। यह ध्यान देने योग्य है कि दसवीं अनुसूची में सभा के सभापति या अध्यक्ष को कोई विवेकाधिकार नहीं दिया गया है। उनकी भूमिका केवल संबद्ध तथ्यों को सुनिश्चित करने तक ही सीमित है। एक बार एकत्रित अथवा प्रस्तुत तथ्यों से यह प्रकट होने पर कि सभा के किसी सदस्य ने ऐसा कोई कृत्य किया है जो दसवीं अनुसूची के पैरा 2 के उप-पैरा (1), (2) या (3) की परिधि में आता है, निरहता लागू होगी और सभा के सभापति या अध्यक्ष को इस आशय का निर्णय लेना होगा।"

19. जैसा कि पूर्व में बताया गया है, मैंने पक्षकारों को अपने-अपने मामलों को प्रस्तुत करने के लिए व्यक्तिगत सुनवाई का पर्याप्त अवसर प्रदान किया। व्यक्तिगत सुनवाई के अभिवक्ताओं और अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि प्रत्यर्थी, जो राजनीतिक दल भाजपा से संबंध रखते हैं, अपने दल से पूर्व अनुमति लिए बिना अथवा इस तरह की अनुपस्थिति के लिए अपने दल से माफी मांगे बिना अपने दल द्वारा जारी किए गए निदेशों के प्रतिकूल 22 जुलाई, 2008 को सभा में मतदान से अनुपस्थित रहे।

20. मेरी राय में, ऐसा कोई विश्वसनीय साक्ष्य मेरे समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है जो इस तथ्य की पुष्टि करता हो कि प्रत्यर्थी वास्तव में बीमार थे अथवा वे इस हद तक बीमार थे कि अपना मतदान करने के लिए 22 जुलाई, 2008 को सभा में उपस्थित नहीं हो सके। आसलोक अस्पताल अथवा अन्य किसी अस्पताल के दस्तावेजों को सिद्ध करने का न तो कोई प्रयास किया गया और न ही इस बात की पुष्टि करने के लिए किसी डॉक्टर को बुलाया गया कि प्रत्यर्थी इतना बीमार था कि वह सभा में उपस्थित नहीं हो सका। आसलोक अस्पताल की डिस्चार्ज समरी पर भी यदि विचार किया जाए तो इससे भी ऐसी किसी बीमारी का पता नहीं चलता है जो कम से कम मतदान के समय सभा में उपस्थित रहने से प्रत्यर्थी पर रोक लगाती हो। इसके अलावा, आरएमएल अस्पताल अथवा एम्स से चिकित्सा नहीं करवाने के बारे में उनके द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता है। यह उल्लेखनीय है कि न तो प्रत्यर्थी और न ही उनकी पत्नी, जिनके बारे में यह माना जाता है कि वे उनके साथ एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल जाती रहीं, ने इस मामले में कोई साक्ष्य दिया है।

21. मेरे समक्ष प्रस्तुत सामग्रियों पर उत्सुकता से विचार किए जाने के पश्चात् तथा इस तथ्य पर विचार करते हुए कि प्रत्यर्थी ने इस बात को स्वीकार किया है कि पार्टी का व्हिप उन्हें तामील किया गया था और वे पार्टी द्वारा दिए गए निदेश से पूरी तरह से अवगत थे, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रस्ताव के विरुद्ध मतदान करने के उनके पार्टी के निदेश को न मानकर वे मतदान से निश्चित रूप से अनुपस्थित रहे। मुझे खेद है कि मैं प्रत्यर्थी के इस तर्क को स्वीकार नहीं कर पाया कि वे इतने अधिक अस्वस्थ थे कि मतदान के प्रयोजन से सभा की कार्यवाही में शामिल नहीं हो सके।

22. अध्यक्ष के रूप में मेरा प्राथमिक कर्तव्य संगत तथ्यों का पता लगाना है, जैसा कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया

है। इस निष्कर्ष पर पहुँचते हुए कि प्रत्यर्थी अपने दल के निदेश के विरुद्ध 22 जुलाई, 2008 को मतदान से अनुपस्थित रहे, प्रत्यर्थी का कृत्य संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अंतर्गत आता है तथा मैं तदनुसार विनिश्चय करता हूँ।

23. अतः, मेरा यह निर्णय है कि प्रत्यर्थी श्री चन्द्रभान भैया सिंह, जो मध्य प्रदेश के दमोह संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के निर्वाचित सदस्य हैं, 22 जुलाई, 2008 को हुए मतदान में भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पेश किए गए विश्वास प्रस्ताव के विरुद्ध अपना मत देने के लिए उनके अनुपस्थित रहने के कारण भारत के संविधान की दसवीं अनुसूची के पैरा 2(1)(ख) के अंतर्गत निरह हो गए हैं।

24. इस प्रकार, प्रत्यर्थी 14 वीं लोक सभा का सदस्य बने रहने के लिए निरह हो गए हैं और यही घोषित किया जाता है कि उनका स्थान रिक्त हो गया है।

नई दिल्ली 5 दिसम्बर, 2008

ह./-

सोमनाथ चटर्जी
अध्यक्ष

[सं. 46/15/2008/टी.]

पी.डी.टी. आचारी, महासचिव

LOK SABHA SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th December, 2008

S.O. 2852(E).—The following Decision dated 5th December, 2008 of the Speaker, Lok Sabha given under the Tenth Schedule to the Constitution of India is hereby notified :—

“BEFORE THE HON'BLE SPEAKER OF LOKSABHA

PARLIAMENT HOUSE, NEW DELHI

In the Matter of:

Shri Santosh Gangwar, Chief Whip,
Bharatiya Janata Party,
2, Parliament House, New Delhi

Petitioner

Versus

Shri Chandrabhan Bhaiya Singh,
Member of Parliament (Lok Sabha)
Delhi Address : 201, North Avenue,
New Delhi-110001

Permanent Address : 249, Hansraj House,
Wright Town, District-Damoh
(Madhya Pradesh)

Respondent

Order :

1. This is an application filed by Shri Santosh Gangwar, Member of Parliament, Lok Sabha and Chief Whip, Bharatiya Janata Party against the Respondent Shri

Chandrabhan Bhaiya Singh, Member of Lok Sabha, praying for the disqualification of the Respondent for being and continuing as a Member of the present Lok Sabha under the Tenth Schedule to the Constitution of India.

2. According to the Petitioner, the Respondent belonging to Bharatiya Janata Party (hereinafter referred to as BJP) was elected from Damoh parliamentary constituency of Madhya Pradesh in the election held in May, 2004 on the BJP ticket and his name is entered in the list of BJP Members of Lok Sabha.

3. In the Petition, the Petitioner has stated that for two days' Special Session of Lok Sabha, which was summoned for 21st and 22nd July, 2008 to enable the Prime Minister of India to seek the Vote of Confidence, the BJP on 18th July, 2008 had issued a Three Line Whip to all its Members in Lok Sabha, including the Respondent, to be present in the House on 21st and 22nd July, 2008 and vote against the Motion of Confidence in the Union Council of Ministers.

4. It is contended by the Petitioner that in spite of the Whip having been issued to him by the BJP, on whose ticket the Respondent was elected to Lok Sabha, the Respondent abstained from voting in gross violation of the Party Whip and direction and as such he has incurred disqualification for being a Member of the Lok Sabha, and that this abstention from voting against the Party's direction has not been condoned by the Party.

5. The Respondent filed a Reply on 5th September, 2008 in which he admitted the service of the Whip on him. He further stated that he was conscious about the various responsibilities of a Member of Parliament and that he understood the importance of voting on a particular occasion, particularly when Confidence Motion was the issue.

6. In his Reply, the Respondent further stated that he had reached Delhi on 20th July, 2008 and he had participated at a meeting of the BJP Parliamentary Party on the same date, and on 21st July, had attended the proceedings of the Parliament and that on 22nd July, he had proceeded to attend the meeting of the Parliament, along with his wife, who did not want to leave him because of the bad condition of his health and that at about 3.45 p.m. on 22nd July he “became unconscious while going to Parliament.”

7. In his Reply, the Respondent has further stated that due to his unconscious condition, he was taken to Dr. Ram Manohar Lohia Hospital but as there was no proper response, he was taken to the All-India Institute of Medical Sciences, but “due to the lethargic attitude of the officials, I was taken for medical facility to Aashlok Nursing Home.” He further stated that in Aashlok Nursing Home at about 4.45 p.m. he was admitted and he underwent several tests and that ultimately on 23rd July, he was released from the Hospital.

8. He has further stated in his Reply that he came to know of the events of 22nd July from his wife and he came to now that he was unconscious, was vomiting

blood and having high fever. He has stated that his wife asked his P.A. to inform the BJP leadership and Lok Sabha about his condition, but no evidence has been led to substantiate the same.

9. Therefore, according to the Respondent, because of the condition of his health, he could not attend the proceedings of Parliament on 22nd July, 2008 and as such the provisions of the Tenth Schedule cannot be attracted in his case. He has further alleged that the BJP leadership has personal and political grudge against him and wanted to ruin his political career wholly on baseless grounds, which would be proved by the fact that he was expelled from the party on 23rd July, 2008, on which date also the present petition has been filed.

10. Along with his reply, the Respondent has filed a copy of the letter alleged to have been sent by Shri Arun Jaitley to the Respondent, and copies of some medical papers and bills regarding his treatment at Aashlok Nursing Home, New Delhi.

11. I gave a personal hearing in the matter on 24 September, 2008 and again on 18 October, 2008. On the first day of hearing on 24 September, the Petitioner appeared in person and the Respondent by his lawyer, Shri Varun Thakur, who asked for adjournment on the ground that his Senior Counsel was not available. The Petitioner made certain submissions in which he mentioned about the receipt of the Whip by the Respondent and his abstention from voting and made comments on the reply filed by the Respondent. The learned lawyer of the Respondent repeated his prayer for adjournment stating his client was in a meeting of the District Vigilance and Evaluation Committee and his learned senior was busy elsewhere. However, at the end of the hearing, I directed that written arguments or submissions might be filed on behalf of the Respondent on or before 29 September, 2008 with a copy to the Petitioner.

12. On 29 September, 2008, written arguments were filed on behalf of the Respondent in which he mainly reiterated what is contained in his reply and stated, inter alia, that "it is humbly submitted that no order can be passed without providing an opportunity of personal hearing to the Respondent as it would be against the concept of natural justice and also because, the Hon. Speaker, would not be able to do justice to the Respondent." The Respondent further submitted in his written arguments that there are no grounds on the basis of which any relief could be given to the "BJP Chief Whip."

13. I held the next personal hearing on 18 October, 2008 in which the Petitioner was present and the Respondent was also present along with his lawyer, Shri Varun Thakur. The Petitioner made submissions at the said hearing as would appear from the minutes of the meeting of that date. The learned lawyer of the Respondent then made his submissions. He referred to the discharge summary issued by the Aashlok Hospital regarding the condition of his

client's health. The Respondent himself also made some submissions. In the course of the hearing, the Respondent's lawyer again asked for an opportunity to file a supplementary affidavit regarding some incidents which had taken place on 23, 24 and 25 July (dates subsequent to the date of voting) and to submit some papers to the Lok Sabha Office, requesting, "give me a last opportunity." When almost the hearing was concluded, the lawyer again asked for adjournment on the ground that the Senior Counsel was out of station. I suggested that he could complete his submission and that if he wanted to file any written submissions, I was prepared to give him time. The Petitioner opposed the grant of any further time.

14. At the hearing on 18 October, 2008, I passed the following order :

"In today's hearing, Hon. Shri Santosh Gangwar, the Petitioner as well as Hon. Shri Chandrabhan Singh, MP with his lawyer, Shri Varun Thakur, were present. After the submissions of Shri Santosh Gangwar, Shri Varun Thakur made some submissions and then asked for time on the ground that his senior lawyer is out of Delhi and that he wanted to file a further affidavit/petition. As a last opportunity, I permit the respondent to file a further affidavit/petition on or before 24th October, 2008 with a copy to the petitioner.

By way of last opportunity, I fix a hearing of the matter on 3rd November, 2008 at 5 p.m. for personal hearing. If any senior lawyer is not available on that date, the respondent will please communicate the said fact to the Office so that no further personal hearing will be given.

If any further affidavit/petition is filed by the respondent and a copy is given to the petitioner, the petitioner may file a further rejoinder or reply if he is so advised on or before 31st October, 2008.

If no request for personal hearing is made then no further hearing will be given. This may be noted that this will be the last opportunity."

15. However, no written arguments were filed pursuant to the leave granted on 18 October, 2008. On 20 November, 2008, a further personal hearing was given, at which the Petitioner was present and Shri Ajit S. Bhasme, Senior Advocate appeared on behalf of the Respondent. By way of preliminary observation, Shri Ajit S. Bhasme asked for adjournment on the ground that "the client is in his constituency on account of Assembly elections. He is a political personality and he cannot stay away from there during the elections." He wanted to file a supplementary affidavit to bring on record certain documents, including his client's medical history from 2007, indicating the ailments from which the Respondent has suffered. The Petitioner strongly objected to the prayer for adjournment made by the Respondent's lawyer. Ultimately to give a final opportunity to the Respondent, I allowed the Respondent's

lawyer time to file a written submission within a week as requested by him and I made the following order :

“I have not fixed the date of hearing. The written submission, if any, by the Respondent and Hon. Member Shri Chandrabhan Singh may be filed on or before 27th of November with a copy to Mr. Gangwar. If any reply is there, they can give it with copies to each other and no more hearings in this regard.”

16. Pursuant to the leave granted, the Respondent filed his written submissions through his learned advocate Shri Varun Thakur on 27th November, 2008 in which the Respondent reiterated the submissions made by his lawyer on his behalf and also annexed a copy of the written opinion of Dr. Ashwani Chopra of Aashlok Nursing Home and a copy of the Discharge report dated 17th March, 2007 issued by Dr. Ram Manohar Lohia Hospital. The petitioner filed a replication on 1st December, 2008, in answer thereto.

17. Paragraph 2(1) (b) of the Tenth Schedule to the Constitution provides that subject to the provisions of paragraphs 4 and 5, a Member of the House belonging to any political party shall be disqualified for being a member of the House, if he votes or abstains from voting in such House contrary to any direction issued by the political party to which he belongs, without obtaining the prior permission of such political party or without obtaining the condonation of the political party for such voting or abstention within 15 days from the date of such voting or abstention. In the present case, the provisions of paragraphs 4 and 5 have no application.

18. In the decision of Dr. Mahachandra Prasad Singh *Versus* Chairman, Bihar Legislative Council and others (2004) 8 SCC 747, the Hon. Supreme Court has been pleased to observe that under the Tenth Schedule, “the final authority to take a decision on the question of disqualification of a Member of the House vests with the Chairman or the Speaker of the House. It is to be noted that the Tenth Schedule does not confer any discretion on the Chairman or Speaker of the House. Their role is only in the domain of ascertaining the relevant facts. Once the facts gathered or placed show that a Member of the House has done any such act which comes within the purview of subparagraphs (1), (2) or (3) of paragraph 2 of the Tenth Schedule, the disqualification will apply and the Chairman or the Speaker of the House will have to make a decision to that effect.”

19. As stated before, I gave ample opportunity to the parties to present their respective cases at the personal hearing given to them. From the pleadings and the records of the personal hearing, it is clear that the Respondent had abstained from voting in the House on 22nd July, 2008 contrary to the direction issued by his political party, the BJP, to which he belongs without obtaining the prior permission of his party or without obtaining the condonation of his party for such absention.

20. In my opinion, no reliable evidence has been placed before me to establish that the Respondent was, in

fact, ill or that he was so ill that he could not attend the House on 22nd July, 2008 to cast his vote. No attempt has been made to prove the documents of Aashlok Hospital or any other Hospital nor any doctor has been called to prove that the Respondent was so ill that he could not attend the House. The discharge summary of Aashlok Hospital, even if it is taken into consideration, does not disclose any such illness which could prevent the Respondent from attending the House at least at the time of voting. Further, the explanation given for not getting treatment at RML Hospital or at AIIMS, does not appear to be convincing. Significantly, neither the Respondent nor his wife who had supposedly accompanied him from hospital to hospital gave evidence in the matter.

21. After giving my anxious consideration to the materials before me, and considering the fact that the Respondent has admitted that he was served with the Party's Whip and that he was fully aware of the direction given by the Party, it seems to me that he did abstain from voting against the Motion as directed by his Party. I regret that I am unable to accept the contention of the Respondent that he was not well enough to attend the proceedings of the House for the purpose of voting.

22. As Speaker, my primary obligation is to ascertain the relevant facts as has been held by the Hon'ble Supreme Court. Having come to the conclusion that the Respondent abstained from voting contrary to the direction of his Party on 22nd July, 2008, the act of the Respondent comes within the purview of paragraph 2 (1) (b) of Tenth Schedule to the Constitution and I decide accordingly.

23. Thus, I hold that the Respondent, Shri Chandrabhan Bhaiya Singh, an elected Member of the Lok Sabha from Damoh Constituency of Madhya Pradesh has incurred disqualification under paragraph 2 (1) (b) of the Tenth Schedule to the Constitution of India, by his abstention from casting his vote against the Confidence Motion moved by the Hon'ble Prime Minister of India at the voting held on 22nd July, 2008.

24. Thus, the Respondent stands disqualified for continuing as a Member of the Fourteenth Lok Sabha and it is declared that his seat has fallen vacant.

NEW DELHI

Dated the 5th December, 2008

Sd/-

SOMNATH CHATTERJEE, Speaker”

[No. 46/15/2008/T.]

P.D.T. ACHARY, Secy.-General